TECHNICAL ACTIVITY CARRIED OUT BY CENTRES / OVERSEAS CHAPTERS

Name of Centre / Overseas Chapter:	Meerut Local Centre

Title of Activity:	Celebration of Regional Language Promotion Day		
Activity under Divisional Board (delete which are not applicable):	General		
Date:	21-02-2025	Venue:	On google meet from own place

(Insert photo)

Audience in Presentation

(Insert photo)

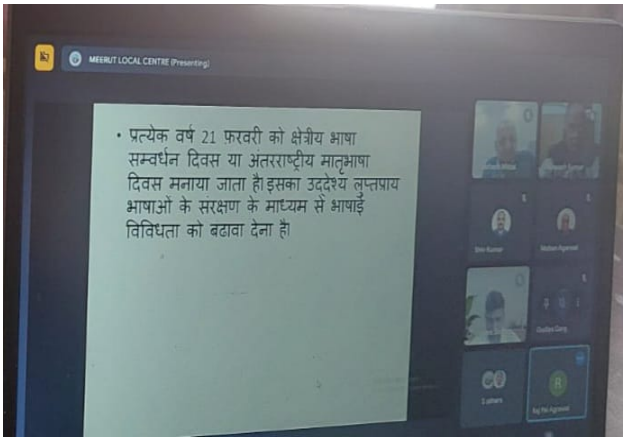

Speaker Delivering Talk

Brief Report:

On February 21, 2025, Regional Language Promotion Day was celebrated by the Local Centre of the Institution of Engineers (India), Meerut. The event was chaired by Er. R. P. Agrawal, Chairman.

At the outset, Er. R. P. Agrawal welcomed all members attending the webinar and delivered a detailed presentation on the theme of the event:

Silver Jubilee Celebration of Mother Language.

- **प्रत्येक वर्ष** 21 **फ़रवरी को क्षेत्रीय भाषा सम्वर्धन दिवस या अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के माध्यम से भाषाई विविधता को बढावा देना है।**
- इसके लिए 21 फरवरी **को ही क्यों चुना गया। इसका विवरण इस प्रकार है। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान के हुक्मरानों ने उर्दू को पश्चिमी पाकिस्तान के साथ साथ पूर्वी पाकिस्तान की भी राजभाषा घोषित कर दिया था। फिर** 1952 **में उन्होंने उर्दू के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को अमान्य घोषित कर दिया। पूर्वी पाकिस्तान जो अब बांग्लादेश है। में बांग्लाभाषी बहुतायत में थे। अतः ढाका विश्व विद्यालय के छात्रों ने इसका कड़ा विरोध किया तथा** 21 **फ़रवरी** 1952 **को पुलिस** गोली से 5 **छात्र मारे गए।**

उनकी याद में वहाँ **स्मृति दिवस मनाया जाता है तथा बांग्लादेश में इस दिन राष्ट्रीय अवकाश रहता है**। इसी कारण **इस दिन का प्रस्ताव** 1998 **में** , एक बांग्लादेशी कनैडियन द्वारा यूनाइटिड नेशन्स **में रखा गया**, **जिसे मान लिया गया** तथा 21 फरवरी सन् 2000 को पहला क्षेत्रीय भाषा सम्वर्धन दिवस मनाया गया।

- **हिन्दी हमारी मातृभाषा है और देश की राजभाषा भी इसे 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का स्थान दिया गया**। इसी कारण 14 **सितंबर को हम हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं**।
- **अब समस्या थी सरकारी कार्य को हिन्दी में करने की इसमें सबसे बड़ी बाधा रही प्रौद्योगिकी की**।
- अगर इतिहास में जाकर देखे तो ज्ञात होगा कि विदेशी शक्तियों के सामने भारत की पराजय का एक बहुत बड़ा कारण प्रौद्योगिकी में पिछड़ापन रहा। पानीपत के पहले युद्ध में भी बाबर की सेना की तोपों के सामने खड़े हमारे हाथी अपनी ही सेना को कुचल रहे थे। जब कभी हमलावर आया तो वह बेहतर प्रौद्योगिकी लेकर आया और हम अपने परंपरागत तरीकों पर निर्भर रहे। भाषा के मामले में भी लगभग ऐसी ही स्थिति रही। बाँस की कलम से लेकर, होल्डर फाउंटेन पैन और आगे के सफर में भी हमें काफी
- समय लगा। जब भारत में हिन्दी में काम करने के लिए हम कलम थामे हुए थें, अंग्रेजी के लिए टाइपराइटर आ चुका था। हिन्दी के लिए टाइपराइटरों की व्यवस्था में काफी समय निकल गया और अंग्रेजी प्रौद्योगिकी व्यवस्था के बूते अपनी बढ़त बनाती रही। ऐसा ही टेलीप्रिंटर, टेलेक्स मशीन आदि के संबंध में भी हुआ। हालांकि आगे चलकर हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए टाइपराइटर/टेलीप्रिंटर आदि की व्यवस्था हुई और हिन्दी की गाड़ी चलने लगी।
- प्रौद्योगिकी के पिछडेपन की समस्या का सामना लगातार करना पड़ा–इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर से लेकर कम्प्यूटर तक– जहाँ देवनागरी के फाण्ट बाद मे विकसित हुए। इसका नुकसान यह हुआ कि अंग्रेजी एक **Preferential** या अधिमान्य माध्यम बनी रही।
- हिन्दी भाषी प्रदेशों में भारतीयों का दृष्टिकाण हिन्दी के प्रति उदासीन बना रहा। यद्यपि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने वर्ष 1901 में हिन्दी साइंटिफिक ग्रॉसरी नामक पारिभाषिक कोश प्रकाशित कर दिया था तथा स्वतंत्रता के पश्चात कुछ वर्षों में ही विभिन्न इंजीनियरिंग विधाओं के तकनीकी शब्द हिन्दी में
- उपलब्ध हो गए थे परन्तु हमने तकनीकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को ही बनाए रखा।
- दूसरी ओर हिन्दी फिल्म उद्योग ने हिन्दी के प्रचार प्रसार में बहुत योगदान दिया। हिन्दी के गाने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी पर्याप्त सुने जाते हैं। हिन्दी भाषी लोगों का बड़ा बाजार होने के कारण भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में काफी वृद्धि हुई।
- ऐसे काफी लोग मिल जाएंगे जो हिन्दी न तो लिखना जानते है और न पढ़ना, परन्तु समझ लेते हैं तथा बोल भी लेते हैं।

- परन्तु अभी तक रोजगार का साधन अंग्रेजी ही बनी रही, तथा हिन्दी उपेक्षित होती रही।
- रोजगार की भाषा अंग्रेजी होने का एक निहितार्थ देखिए। मैने एक हिन्दी भाषी बहुत पढ़ी लिखी तथा उच्च पद पर आसीन महिला से बच्चों को शुद्ध हिन्दी लिखने के संबंध में बात की। उनका उत्तर था कि हिन्दी का प्रयोग केवल **introdution** देने के लिए ही तो होगा, काम तो अंग्रेजी मे ही करना होगा अतः हिन्दी के विषय में चिंतित होने की क्या आवश्यकता?
- हिन्दी के प्रचार प्रसार में हमारा सबसे बड़ा योगदान अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा। हम यदि अंग्रेजी में कोई वर्तनी अशुद्धि अर्थात **spelling mistake** करते हैं तो ग्लानि का अनुभव करते हैं, परन्तु यही अशुद्धि जब हिन्दी में करते हैं तो ग्लानि का अनुभव नही करते वरन् मुस्कराकर 'मेरी हिन्दी जरा कमजोर है' कहकर खाना–पूरी कर लेते हैं। इस दृष्टिकोण को बदलना चाहिए।
- एक और उदाहरण देखिए। हम जब किसी सार्वजनिक वाहन से यात्रा करत हैं तो पास में बैठे बालक से अंगेजी की वर्णमाला तो पूछ लेते हैं किन्तु हिन्दी की वर्णमाला पूछने का साहस नही करते क्योंकि हमें स्वयं भरोसा नहीं होता कि हमें क्रमवार वर्णमाला आती है।
- बैंक या अन्य विभागों में विभिन्न कार्यों के लिए फार्म हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनो भाषाओं में उपलब्ध होते हैं, परन्तु हम उसे अंग्रेजी में ही भरना पसंद करते है। जरा याद कीजिए कि हमने बैंक की कोई जमा पर्ची या **deposit slip** देवनागरी मे कब भरी थी।
- हम प्रयास करें कि हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाया जाए। यदि तकनीकी या चिकित्सीय शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दिया जाए तो बिना कुछ कहे लोगों के दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन आएगा और हिन्दी अपना उचित स्थान स्वयमेव प्राप्त कर लेगी।

The session concluded with valuable suggestions from members on ways to promote the mother language. Participants actively engaged by reciting poems and showed keen interest in the event. In conclusion, Er. S. C. Mittal, Hon. Secretary, presented a vote of thanks.